Volume-3, No. II, Aug-2016, pp. 83-84

# पर्यटन एवं विकास : चुनौतियाँ एवं अवसर

**डॉ0 पिंगलेश कुमार,** (भूगोल विभाग)
राणा बेनी माधव डिग्री कालेज सिमौर, पिहानी, हरदोई उ.प्र. भारत।

पर्यटन एक ऐसी यात्रा है, जो मनोरंजन या फुरसत के क्षणों का आनन्द उठाने के उद्देश्य से की जाती है। मानव के विकास सुख और शान्ति की संतुष्टि व ज्ञान के लिए पर्यटन को अति आवश्यक माना गया है। आज कल हर व्यक्ति किसी न किसी तनाव अथवा परेशानी से घिरा हुआ है। भौतिकवादी चकाचौंध में मानव की खुशी खो गयी प्रतीत होती है। पर्यटन अर्थात् थोड़े समय का घूमना फिरना जीवन में खुशियों के पल को वापस लाने में मदद करता है। मनुष्य अपनी यात्रा कई उद्देश्यों को लेकर करता है। इनमें एक उद्देश्य उन स्थानों की यात्रा होती है, जहॉ देवताओं का निवास होता है और ऐसी यात्रा की परम्परा सदियों से चली आ रही है। किसी राज्य के विकास में पर्यटन न केवल महत्वपूर्ण आर्थिक क्रिया है बल्कि विभिन्न राष्ट्रों में सांस्कृतिक परिवर्तन लाने का महत्वपूर्ण माध्यम है।

**मुख्य शब्दः** पर्यटन, पर्यटन स्थल, देशाटन, अतिथि देवोंभव

विश्व पर्यटन संगठन के अनुसार पर्यटक वे लोग हैं जो यात्रा करके अपने सामान्य वातावरण से बाहर के स्थानों में जाते हैं, यह दौरा ज्यादा से एक साल के लिए मनोरंजन व्यापार का अन्य उद्देश्यों से किया जाता है। पर्यटन को अनेक विद्वानों ने अपने ढंग से परिभाषित किया है, लेकिन संयुक्त राष्ट्र संघ का रोम में सन् 1963 में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय एवं पर्यटन सम्मेलन में बहुत ही सरल शब्दों में इनका वर्णन किया गया है। इस सम्मेलन की परिभाषा कोई भी व्यक्ति जब किसी अन्य देश का आनन्द पाने, छुट्टी बिताने, स्वास्थ्य ठीक ठाक करने, तीर्थ यात्रा, खेलकूद, व्यापार अथवा किसी अन्य उद्देश्य से यात्रा करता है और वहॉ कम से कम 24 घंटे ठहरता है, तो उसे पर्यटक कहा जाता है। प्रस्तुत शोध पत्र द्वितीयक स्त्रोतों से संकलित तथ्यों के आधार पर विवरणात्मक प्रस्तुति के रूप में है, जिसका मुख्य उद्देश्य आर्थिक सामाजिक विकास पर्यटन की भूमिका पर प्रकाश डालना है।

भारत में अतीत से भ्रमण और देशाटन की परम्परा रही है। मैक्स मूलर ने इसकी महत्ता को वर्णित करते हुए कहा कि ''यदि हमें सम्पूर्ण विश्व में किसी देश की खोज करनी हो, जिससे प्रकृति भी सर्वाधिक सम्पदा शक्ति और सौन्दर्य निहित हो और जिसके कुछ भाग तो वस्तुतः धरती पर स्वर्ग हो तो मैं भारत का नाम लूॅगा।'' पाश्चात्य विद्वान संत आगस्टिन ने तो कह दिया कि ''बिना विश्व दर्शन ज्ञान ही अधूरा है।'' वर्तमान में पर्यटन एक ऐसे उद्योग के रूप में देखा जाने लगा है जो आपके मनोरंजन के साथ–साथ जीवन स्तर में वृद्धि करने में भी सक्षम है। वर्ष 1980 में फिलीपीन्स की राजधानी मनीला में विश्व पर्यटन संगठन द्वारा आयोजित सम्मेलन की उद्घोषणा में कहा गया कि पर्यटन का उद्देश्य व्यक्ति के जीवन स्तर को बढ़ाना है। यह व्यक्ति को बेहतर जीवन शैली प्रदान करता है।

भारत में पर्यटन एक ऐसे उद्योग के रूप में स्थापित हो चुका है, जो करीब 32 अरब डालर का कारोबार कर रहा है। पर्यटन का राष्ट्रीय सकल घरेलू उत्पाद में 6.5 प्रतिशत तथा कुल रोजगार में 8.5 प्रतिशत योगदान है। भारत में वर्ष 2008 में पर्यटन उद्योग 100 अरब डालर का रहा है और 9.4 प्रतिशत वार्षिक दर से इसके वर्ष 2018 तथा 275 अरब डालर अमेरिकी डालर के होने की संभावना है। विश्व व्यापार एवं पर्यटन के अनुसार 2009–2018 के बीच भारत पर्यटन की दृष्टि से प्रमुख आर्कषण का केन्द्र होगा। वर्ष 2020 तक भारत में पर्यटन उद्योग सकल घरेलू उत्पाद में करीब 8 लाख 50 हजार डालर रूपये योगदान करेगा। पर्यटन क्षेत्र पर भूमण्डलीय कारण का भी व्यापक प्रभाव पड़ा है। विदेशी मुद्रा अर्जन करने वाले पॉच प्रमुख क्षेत्रों में से पर्यटन भी एक है। पर्यटन मंत्रालय भारत सरकार की वार्षिक रिपोर्ट 2014–15 के आंकड़ों के अनुसार भारत में पर्यटन से विदेशी मुद्रा आय विवरण निम्नवत् है।

| वर्ष | विदेशी मुद्रा(करोड़ों में) |
|---|---|
| 2010 | 64889 |
| 2011 | 77591 |
| 2012 | 94487 |
| 2013 | 107671 |
| 2014 | 120083 |

रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2014 में विदेशी पर्यटकों की संख्या में 10.6 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई। आर्थिक विकास के साथ–साथ रोजगार सृजन में इसका बड़ा योगदान है। एक शोध पत्र में अनुमान लगाया गया है कि 2020 तक 35 लाख लोगों को होटलों में, 27

लाख 30 हजार लोगों को रेस्टोरेंट में, 13 लाख लोगों का राजमार्गों पर स्थित ढाबे में तथा 2 लाख 40 हजार लोगों की यात्रा व्यवस्था में रोजगार मिलेगा।

पर्यटन से कस्टम ट्रेवल एजेन्सी एयर लाइन्स टूर आपरेटर्स होटल उद्योग एवं गाइड के आय में रोजगार के व्यापक अवसर उपलब्ध हो रहे हैं। ट्रैकिंग कभी तीर्थ पर्यटन से जुड़ा था लेकिन आज यह साहसिक पर्यटन का महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है। पर्यटन में तीर्थ यात्रा पर्वतारोहण हाइकिंग और स्कीइंग के साथ–साथ इको पर्यटन चिकित्सा पर्यटन भी जुड़ गये हैं। विशालतम आवासीय भवनों में चल रहे होटलों को हेरिटेज नाम दिया गया है। इसमें हमारी प्राचीन विरासत संरक्षित होने के साथ–साथ अतीत की जीवन शैली को नजदीक से देखने का अवसर मिलता है। यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल घोषित भारतीय स्थलों के संरक्षण का श्रेय पर्यटन को ही है। कुल्लू, दशहरा, गोवा, कार्निवाल, खुजराहों, नृत्य महोत्सव जैसे उत्सवों का पुर्नजीवन पर्यटकों की पहल से हो चुका है। पर्यटकों द्वारा बड़े पैमाने पर शिल्प कलाकृतियों की खरीददारी की जाती है। सूरज कुण्ड मेला शिल्प सम्बंध का एक अनोखा उदाहरण है। भारत अनेकता में एकता का सबसे बड़ा प्रतीक है। इसको समृद्ध करने में पर्यटन का बड़ा योगदान है। बिना किसी निवेश के छोटी–छोटी चीजें पर्यटकों को बेचने के लिए सैकड़ों परिवार लगे हैं, वहीं उनकी रोजी रोटी भी है। पहाड़ी क्षेत्रों में तरह–तरह के फलों के जूस, आचार, मुरब्बे तथा चाय से लेकर हस्तशिल्प की वस्तुए स्मृति चिन्ह् के रूप में यात्रा को तरो ताजा बनाये रखती हैं।

पारिस्थितिकीय पर्यटन का आर्कषण भी भारतीय पर्यटन की उपलब्धियों में शामिल है। ओड़िसा, गोवा, मुम्बई तथा केरल के समुद्र तटीय बीच कश्मीर के गलीचे, बनारस की साड़ियॉ, आगरा और कानपुर के चमड़े के उत्पाद एवं देश में अपनी खुशियों के लिए प्रसिद्ध ऐसे बहुत सारे क्षेत्रीय बाजार पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। पिछले कुछ वर्षों में मेडिकल टूरिज्म भी बढ़ा है, जो आर्थिक दृष्टि से महत्वपूर्ण रहा है।

वर्तमान में अनेक ऐसी परियोजनायें हैं, जो आयुर्वेदिक चिकित्सा की खोज में आने वाले पर्यटकों की आवश्यकताओं की पूर्ति करती आ रही है। केरल पर्यटन विकास निगम ने कोच्चि स्थित अमृता चिकित्सा विज्ञान संस्थान से समझौता किया है। जिसमें 16 देशों के मरीज इलाज के लिए आते हैं। आयुर्वेदिक का लाभ उठाने के लिए आने वाले पर्यटकों की संख्या में निरन्तर वृद्धि हो रही है। वैद्य रत्न के नाम से प्रसिद्ध संस्थान की समूचे भारत में 1000 से अधिक शाखायें चल रही है। के0टी0डी0सी0 के आंकड़ों के अनुसार लगभग पॉच लाख विदेशी पर्यटक प्रतिवर्ष आयुर्वेदिक इलाज के लिए केरल आते हैं।

पर्यटन का महत्व और लोकप्रियता देखते हुए ही यू. एन.ओ. ने 1980 से 27 सितम्बर को विश्व पर्यटन दिवस मनाने का निर्णय लिया। विश्व पर्यटन दिवस के लिए 27 सितम्बर का दिन इसलिए चुना गया, क्योंकि इसी दिन 1970 में विश्व पर्यटन संगठन का संविधान स्वीकार किया गया था। विश्व पर्यटन दिवस को मनाने का उद्देश्य पर्यटन और उसके सामाजिक सांस्कृतिक आर्थिक मूल्यों के प्रति विश्व समुदाय को जागरूक करना है। भारतीय पर्यटन के एक ब्रान्ड 'आतुल्य भारत' के जरिये पर्यटन को प्रोत्साहित किया जा रहा है। आतुल्य भारत ब्रान्ड का इस्तेमाल करके राज्य सरकारें प्रोत्साहन अभियान चला रही है। जिनके द्वारा प्रमुख अन्तर्राष्ट्रीय अभियानों में शामिल होकर पर्यटनों को आकर्षित किया जा रहा है। अतिथि देवो भवः का उदघोष करने वाला भारत बाहरी पर्यटकों के लिए हमेशा आवभगत को प्रस्तुत रहता है।

यद्यपि भारत में पर्यटन उद्योग के लिए काफी प्रयास किये जा रहे हैं, किन्तु फिर भी आधार भूत संरचना नहीं है। व्यस्त पर्यटन सीजन में किफायती होटल सुविधाओं का आभाव है।

पर्यटन विकास के लिए प्रशिक्षित गाइड, कुशल श्रमिक संसाधन, स्वच्छता, सुरक्षा तथा शान्ति का महौल होना अति आवश्यक है। साथ–साथ विदेशी पर्यटकों के साथ धोखाधड़ी व बुरा व्यवहार करने वाले व्यक्तियों के विरूद्ध कठोर कार्यवाही होनी चाहिए। व्यस्त सीजन में महत्वपूर्ण हवाई उड़ानों को पर्यटन टूर में शामिल करना आवश्यक है। साथ ही आन्तरिक इकाई यात्रा की कीमतों में कमी करने की आवश्यकता है। पर्यटन के समुचित विकास हेतु बहुआयामी राष्ट्रीय नीति एवं सभी प्रशासनिक संगठनों में आपसी सहयोग एवं समन्वय की आज महती आवश्यकता है।

## संदर्भ सूची

1–योजना मई, 2010 से 2014 तक
2–प्रतियोगिता दर्पण अक्टूबर, 2015
3–कुरूक्षेत्र मासिक पत्रिका
4–भारत में पर्यटन और राष्ट्रीय विकास–डॉ0 एस0के0 गिल
5–प्रतियोगिता दर्पण सितम्बर, 2015